



डॉ० चन्द्रकेश कुमार

“हर लम्हा खुशियों का” पर्यटन कल, आज और कल

असि० प्रोफेसर— अर्थशास्त्र, बी०बी०डी०पी०जी० कालेज पररुईया आश्रम, अम्बेडकर नगर(3030) भारत

Received-10.10.2022, Revised-16.10.2022, Accepted-19.10.2022 E-mail: kchandrakesh98@gmail.com

सांशः— वैसे तो प्राचीन काल से ही घूमने-फिरने के अनेक साधन थे, देव युग में जहाँ पुष्पक विमान, नावें और रथ, तो उसके बाद के समय में घोड़ा, गाड़ी, बग्गी व पालकी, वर्तमान समय में, रेल, बस, कार, मोटरसाइकिल और हवाई जहाज, व पानी के जहाज, रही बात यात्रा की तो, जीवन स्वयं एक यात्रा हैं। यात्रा के बिना जीवन अधूरा है, दोनों का अस्तित्व ही एक दूसरे के साथ सम्पूर्ण होता है, यात्रा न हो तो सांसों में भी सड़ान उत्पन्न हो जायेगी। सांसे चलती है तो है तो जीवन चलता है। यह नदियां के उस पानी की तरह जो निरंतर बहता रहता है और अपने साथ अच्छी-बुरी हर वस्तुएं बहा ले जाता है। इसी कारण बदलाव भी आता है और नदियां हर बार एक नये रूप में दिखाई देती हैं जिससे वह दूसरे स्थान के गुण ले लेती हैं और उस स्थान को नया जीवन दे देती हैं। यही बात अपने जीवन के लिए भी कह सकते हैं, जीवन पानी की धारा की तरह समय के साथ निरंतर बहता रहता है।

कुंजीभूत शब्द— देव युग, पुष्पक विमान, बग्गी व पालकी, अस्तित्व, निरंतर, शक्तियत, सेलिब्रिटीज, सड़ान, लम्हा।

घूमना-फिरना, सैर-सपाटे एक अच्छे जीवन के लिए बहुत जरूरी हैं। यह सब हमारे जीवन के लिए नई जोश, नई उम्मीद एवं नई ताजगी से भरते हैं, लेकिन आज व्यस्त जिंदगी में घूमना फिरना न के बराबर हो गया है, जो सुकून कम तनाव अधिक देता है। इसीलिए ऐसा क्या करें कि पूरा सफर हमें नई ताजगी दे और हमारी मीठी यादों का हिस्सा बन सके, ताँकि हर लम्हा खुशियों का हो। पर्यटन आप की शक्तियत को एक नया आयाम, एक नया लुक देता है। डॉक्टरर्स, साहित्यकार, फिल्मकार, नेता, अभिनेता आदि विभिन्न क्षेत्रों के सेलिब्रिटीज का भी यही मानना है।

“सैर कर दुनियां के गाफिल, जिन्दगानी फिर कहा,

गर जिन्दगी कुछ रही तो, नौजवानी फिर कहा”

इसीलिए कहा जाता है कि “मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यात्रा की यादें आजीवन बनी रहती हैं। इसलिए यात्रा ऐसी होनी चाहिये कि जिसका सुखद अनुभव आजीवन व्यक्ति को ताजगी प्रदान करें, ताकि व्यय राशि को यादों के रूप में बार-बार कैश किया जा सके।” मनोवैज्ञानिक पहलू छुट्टियों का समय हो, पर्यटन की बात न की जाय, तो कुछ अधूरापन सा महसूस होता है। पर्यटन केवल मौज-मस्ती का ही साधन नहीं है, यह एक जरूरत भी है, पर्यटन आप की शक्तियत को एक नया आयाम, एक नया लुक देता है। आप के ज्ञान में बढोत्तरी करता है। चिकित्सक, साहित्यकार, फिल्म, निर्माता, अभिनेता आदि विभिन्न क्षेत्रों के सेलिब्रिटीज का भी यही मानना है। पर्यटन शब्द के कल्पना मात्र से परिभ्रमण, मनोरंजन, ज्ञानवर्धक, रेल यात्रा, बस यात्रा, हवाई जहाज यात्रा, व पानी की जहाज यात्रा, उक्त सुख अनुभूतियों से मन रोमांचित और उत्साहित हो उठता है। पर्यटन आधुनिक काल का द्योतक नहीं है। इसका प्रचलन सदियों से जाने-अनजाने में होता रहा है। जिज्ञासु और प्रगतिशील प्रवृत्ति होने के कारण मनुष्य सदियों पूर्व सीमित साधनों यहां तक कि साधनों के अभाव में भी सुदूर देश की कठिन यात्रा महिनों, वर्षों करके प्रकृति के खजाने की खोज में निरंतर प्रयासरत रहा है।

“आप यूँ समझिये कि जो लम्हा, समय, पैसा, जोखिम भ्रमण के लिए व्यय किया ओ आजीवन संचित सुखद अनुभूति के रूप में आप के मन, मस्तिष्क में बन्द हैं, उसकी यादें जब आप चाहें राहत दिला सकता हैं।” निःसंदेह सदियों पूर्व खोज के उद्देश्य से प्रायः कोलम्बस, वास्कोडिगामा जैसे लोग दूसरे देशों में भ्रमण के लिए जाते थे किंतु आज अधिकांशतः लोग खुशियों, मनोरंजन, स्वास्थ्य आदि के लिए अपने ही देश व विदेश के विभिन्न स्थलों में पर्यटन के लिए आने-जाने लगे हैं। विविधता और परिवर्तन मनुष्य के वाह्य और आन्तरिक वातावरण को नवीन और सजीव बना देता है। जो कि आज मनुष्य की आवश्यकता का अंग बन गया है। यही कारण है कि छुट्टियां शुरू होते ही अधिकांश घर-परिवार में अपनी सामर्थ्य के अनुसार घूमने-फिरने की योजना प्रारम्भ हो जाती है। बच्चे-बूढ़े जवान सभी में प्रेरणा स्फूर्ति, उत्साह का संचार दौड़ पड़ता है। विभिन्न प्राकृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल का लुभावना दृश्य आखों के सामने घूमने लगता है। भला क्यों न हो?

आज के दौर में जीवन घड़ी के सूई से भी तेज है। निरंतर काम का दबाव, सफलता की चिंता, असफलता का भय, विभिन्न मुद्दों के समाधान का तनाव, रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था, अनिश्चितता, का डर, बच्चों की पढाई की चिंता आदि विषयों पर चिन्तन करना जीवन की आवश्यकता बन गई है, लेकिन आज व्यस्त जिन्दगी में घूमना-फिरना न के बराबर हो गया है जो सुकून कम तनाव अधिक देता है। विद्यालय सत्र प्रारंभ होते ही बच्चों के माता-पिता, सगे संबंधियों के लिए पूरे



वर्ष का कैलेण्डर निश्चित हो जाता है। सफलता-असफलता, तनाव, डर, ट्यूशन, टेस्ट, कोचिंग, होमवर्क, प्रोजेक्ट के वातावरण में शारीरिक-मानसिक उर्जा का व्यय तेजी से होता है। जीवन का दूसरा रंग फीका पड़ने लगता है, इन्हीं का संतुलन बनाने के लिए भ्रमण पर जाना स्वास्थ्यबर्धक, ज्ञानवर्धक और रोचक होता है।

आज विश्व में सबसे बड़े उद्योग का दर्जा प्राप्त कर चुके पर्यटन उद्योग का विगत दो दशकों में इतनी तीव्र गति से विकास हुआ है कि पर्यटकों के बढ़ती हुई भीड़ के कारण विभिन्न पर्यटक स्थलों पर हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं की ओर से तेजी से चल रहा है। अधिकांश स्थिति में एक स्थान पर भ्रमण में जाना विशेषकर मध्यवर्ग के लिए बार-बार सम्भव नहीं है।

पर्यटन का विस्तार आज जो हुआ है, तो इसके साथ कई पहलू जुड़े गए हैं। हर लम्हा खुशियों का, सैर-सपाटा, यौनी कि पर्यटन जो कई तरह से हमारे लिए लाभकारी साबित हो सकता है। इसके सम्बन्ध में निम्न उक्त प्रेरणा देनेवाली पंक्ति से पर्यटन के इतिहास का महत्व ज्ञात होता है।

1-संकेत के लिए लाभकारी- संकेत का सीधा ताल्लुक मन से जुड़ा होता है। समय के साथ-साथ मन व शरीर में भी कुछ बदलाव चाहता है। मन एकरूपता से उब जाता है इसी लिए शरीर सुस्त हो जाती है और मस्तिष्क भी सही तरीके से काम नहीं कर पाता है। जैसे ही वह बदलती हवा और बदलते वातावरण में खुद को पाता है, उसमें कुछ कर गुजरने की जिज्ञासा पनपने लगती है। यही जिज्ञासा इंसान में जीने की तमन्ना जगाती है।

2- ज्ञान में इजाफा- जब आप अपने आसपास के क्षेत्रों से दूर हटकर किसी अन्य क्षेत्र के तरफ अपना रुख करते हैं, तो वहां का वायु, जल, बदल जाता है, वहाँ की भाषा बदल जाती है, वहां का रहन-सहन बदल जाता है। ये सभी आप अपनी आँखों से देखते और महसूस करते हैं, वहां पर उपस्थित इमारतों, वस्तुओं के बारे में बहुत कुछ सोचने समझने को मिल जाता है जिसे हम पहले से नहीं जानते हैं, वहां के रीति- रिवाज, परम्परा और संस्कृति से भी हम अवगत होते हैं। इस तरह हमारे ज्ञान में इजाफा होता है, हम एक नवीनतम माहौल भी पाते हैं, जो हमारे जीवन पर एक अमिट छाप बनकर रह जाता है।

3-जिम्मेदारियों से मुक्ति- जीवन की भागमभाग, गृहस्थी का मायाजाल और जिम्मेदारियों का भार हमें एक बंधी हुई जिन्दगी देता है, मन इससे दूर हट कर कुछ मौज-मस्ती चाहता है, वह चाहता है कि सही किन्तु रोजमर्रा की जिम्मेदारियों से मुक्ति मिले। ऐसा उसे मौजमस्ती से ही मिल सकता है। इन्हीं सबों से उसे आनंद और शान्ति का एहसास होता है।

4-बौद्धिक क्षमता में इजाफा- जब कभी भी भ्रमण पर निकलते हैं, तो हमारा परिचय नये स्थानों से होता है। हमें हमारी भौगोलिक दशा का सही संकेत मिलता है किताबों से हमें केवल जानकारी मिलती है, लेकिन वास्तविक स्थिति से अवगत तो केवल हम उस उचित स्थान पर जा कर ही हो पाते हैं। यह ज्ञानार्जन हमारी बौद्धिक क्षमता का विस्तार करता है। यह सैर-सपाटे, घुमना फिरना, देखना और मनोरंजन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह नये माहौल को समझने और फिर उसके अनुसार खुद को सविस्तार देने से भी सम्बन्ध रखता है, किस जगह की कितनी विस्तृत और प्रमाणिक ज्ञान आप जुटा पाते हैं। यह आप के बौद्धिक स्तर पर निर्भर करता है।

5-सामाजिक दायरा बढ़ता है- नये व्यक्तियों से मिलने और उनसे वार्तालाप करने से हम सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक विचारों से अवगत होते हैं और हम एक दूसरे के ज्ञान अच्छाईयों -बुराईयों से परिचित होते हैं। कई बार एक दूसरे से बात करते हैं तो पाते हैं कि घुमना-फिरना इंसान के लिए अति आवश्यक है, इससे आप को भिन्न भिन्न लोगों से मिलने का अवसर मिलता है और आप के सोचने समझने का दायरा बढ़ता है।

6-परिस्थितियों से जूझने की ताकत- घूमने-फिरने से निर्णय लेने की क्षमता पर भी सकारात्मक प्रभाव देखें जा सकते हैं अगर यात्रा के दौरान आप किसी मुसीबत में पड़ जाते हैं, तो उस समय आप को अचानक ही क्या करना पड़ता है? कैसा निर्णय लेना पड़ता है? या आप को उन हालातों से कैसे निपटना पड़ता है, आप उन हालातों को कैसे अपने अनुकूल बनाकर बच सकते हैं। यह सब आप के निर्णायक शक्ति को मजबूत करता है। आप को संकटों से जूझने की ताकत देता है। पर्यटन के विषय में कह सकते हैं कि वह इंसान की सोच को विस्तृत आयाम देता है, कहा जा सकता है कि पर्यटन का लाभ पर्यटक की अपनी प्रवृत्ति पर निर्भर करता है कि वह इसे कैसे देखता है। अगर आप पर्यटन पर जा रहे हो तो, पर्यटन की योजना बनाते समय कुछ महत्वपूर्ण सावधानियाँ रखना होता है-

1-पर्यटन स्थल का चयन- पर्यटन की योजना बनाने में, पर्यटन स्थल का चयन सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। पर्यटन स्थल के चुनाव में भ्रमणकर्ता की रुचि, स्वभाव, आयु, उद्देश्य, सामर्थ्य तथा मौसम आदि का सर्तकता सूझबूझ का प्रमाण है। जैसे कि धार्मिक रुचि वालों को धार्मिक स्थल, कलात्मक रुचि वालों को कलात्मक तथा शान्तिप्रिय को प्राकृतिक स्थल, बच्चों को



प्राकृतिक स्थल, बाग-बगीचे, पहाड़ो झरनों, चिड़िया घर, संस्कृति प्रेमी व्यक्ति को ऐतिहासिक स्थल प्रिय लगते हैं। इसी प्रकार मौसम की दृष्टि से गर्मी में ठंडे स्थान, ठंडक में गर्म स्थान (विपरीत मौसम वाले) सुखद होते हैं। मितव्ययी यात्रा के लिए ऐसे स्थान भी उपयुक्त होते हैं जहाँ अपने सगे संबंधियों या परिचित रहते हो।

2- प्रारम्भिक तैयारियों का महत्व- भ्रमण को मधुर बनाने में प्रारम्भिक तैयारी महत्वपूर्ण होती है। भ्रमण के अवधि पर तैयारी निर्भर करती है आम तौर पर स्वदेश में पर्यटन अवधि कम से कम 10 या 12 दिन और ज्यादा से ज्यादा 15-20 तक की होती है, समय के अनुसार कपड़ों का चयन, भोजन सामग्री की योजना बनाना सहज होता है। जैसे कि खाने की वस्तु ऐसी हो जो शिघ्र नष्ट न हो, और सिंथेटिक जिंस व गहरे रंग के कपड़ें, सफर में किफायती एवं उपयुक्त होते हैं। भ्रमणकर्ता की आयु संख्या और स्वास्थ्य के अनुसार सामान की मात्रा और वजन भ्रमण को आसान बनाने में सहयोग प्रदान करता है। यात्रा के दौरान सामान क्या हो यह देख ले जैसे-रोजमर्रा की इस्तेमाल की वस्तुएं-सुई, धागा, कैंची, तेल, साबुन, तौलिया, कंधी, क्रीम, पाउडर, हेयर प्रिंस, रबड़ बैग,, शीशा, नेकलेस, जुराबें, बेल्ट्स छोटी-मोटी दवाईयाँ इत्यादि।

3-सावधानियों का महत्व- कैसे रखें सामान-अनहोनी कभी भी कही भी हो सकती है। भ्रमण का असली मजा तो तब है जब आप बिना किसी परेशानी के हसी खुशी के साथ एंजॉय करते हुए जाएं और लौटे भले ही 10 या 12 दिन के लिए कहीं जाएं लेकिन चार या पांच सूट से ज्यादा न ले जाएं, उन्हें बड़े खाने में पहले ही व्यवस्थित कर ले। आप को इसके आलावा यह भी सोच लेना चाहिए कि आप को कौन से दिन कौन कपड़ा पहनना है, उसीके अनुसार रख लें।

4-घर की चाभियाँ- आप भ्रमण पर जा रहे हैं तो भी यह जिम्मेदारी आप की बनती है कि आप अपने घर की सुरक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दें। आप बाहर जाते समय घर की चाभियाँ भीतर के पाकेट में रखें या खास विश्वासनीय लोगों को सौंप देना चाहिए, और भ्रमण की जानकारी कम से कम लोगों को दें।

5- पैसे कहाँ रखें- आप भ्रमण पर जा रहे हैं, तो आप को पैसे की अक्सर जरूरत पड़ती रहती है, इसलिए इसे सुरक्षित स्थान पर रखें, छोटी-मोटी चेंज और सिर्फ किराया अलग पर्स में रखें और शॉपिंग के लिए अलग। इस बात का खास ख्याल रखें कि सारे पैसे एक जगह या सिर्फ एक व्यक्ति के पास न हो, उसे कई लोगों में वितरित कर दें। नगद नारायण यानी कैश के साथ चलने का अब जमाना तो रहा ही नहीं, जेब में मोटी रकम लेकर चलने का सीधा संबंध कि आप ढेर सारी मुसीबत को भी अपने साथ ढो कर लेजा रहे हैं। अब तो ए.टी.एम.,क्रेडिट कार्ड की सुबिधा का लाभ लिया जा सकता है। एक वक्त था, जब लोग कहीं बाहर निकलने पर "यात्री चेक"को ही सुबिधा जनक मानते थे, लेकिन यह तो तब की बात है, जब क्रेडिट कार्ड का प्रचलन नहीं था अब तो जमाना ही क्रेडिट कार्ड का है, इसकी बहुआयामी खूबियों और उपयोगिता के चलते ही इसे "ईजी मनी"और "स्मार्ट मनी"जैसी शब्द से उपमा दी गई है।

6- नजदीकियां न बढ़ायें- खासकर देखने में यह आया है कि लम्बे सफर में लोग एक दूसरे से खूब मिल-जुल कर वार्तालाप करते हैं, हसी, टिठोलियां शुरू कर देते हैं, यहां तक कि खाने पीने की वस्तु भी लेना-देना प्रारंभ कर देते हैं, यह गलत है। घनिष्ठता बढ़ाएं, लेकिन एक सीमा के दायरे में रह कर अनजान व्यक्ति से खाने पीने की सामग्री लेने से बचें, हो सकता है कि अमुक व्यक्ति खान-पान के किसी भी वस्तु में नशीला पदार्थ मिलाकर आप का सामान ले कर फरार हो जाय।

7- सामान पर पैनी नजर रखें- अपने सामान अटैची, बैग या अन्य सामग्री को अपने सीट से ज्यादा दूर न रखें, ऐसा भी न हो कि सावधानी के चक्कर में आप बार-बार जा कर अपने सामान को ढूँढते रहे, ऐसा करने से चोर उच्चके आप के सामान को उड़ाने के चक्कर में पड़ जाते हैं, सम्भव हो सके तो सूटकेस या बैग को लाक करके रखें।

8- बच्चों का खास ध्यान- बच्चों तो मन के सच्चे होते हैं, वह किसी के भी बहकावे में आसानी से आ जाते हैं, इसी लिए उन्हें समझाएं कि बस या ट्रेन में इधर-उधर किस प्रकार से नुकसान देह हो सकता है। यह भी जरूरी है क्योंकि हो सकता है कि कोई व्यक्ति बच्चों को माध्यम बनाकर आप को नुकसान पहुँचाना चाहता हो। अतः बच्चों को लावारिस वस्तुओं से दूर रहने की सलाह दें।

पर्यटन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारण- अगर सर्वप्रथम यात्रा की इच्छा लिए दूर-दरार से विदेशी सैलानी जब हमारे यहां आवागमन पर आते हैं, तो यहां की द्रुतगामी सड़कें, रेलें, बसें, मोटरसाइकिल, हवाई जहाज, संचार, सुरक्षा, खान पान, अतिथिगृह आदि इन सब साधनों का अभाव होने के कारण पर्यटकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे वह पुनः दुबारा उक्त स्थान पर आने में बहुत संकोच करते हैं। पर्यटकों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारणों पर नजर डालने पर निम्नांकित कारण दिखाई देते हैं, जैसे-

आये दिन देखने को मिलता है कि ट्रेन, बस, हवाई जहाजों में अक्सर चोरी-चकारी, हत्या, छेड़खानी, बलत्कार जैसी निरीहपराध बढ़ता जा रहा है। इन्ही निर्ममता के कारण विदेशों से आने वाले सैलानियों के संख्या में कमी होने के असार नजर



आते हैं। वर्तमान समय में किसी न किसी रूप में विश्व के लगभग प्रत्येक देश को आतंकवाद जैसे वीभत्स समस्या का सामना करना पड़ता है। आतंकवाद धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक उद्देश्यों से प्रेरित तिव्र हिंसा का प्रयोग है, जो कि अपनी बातों को मनवाने के लिए सार्वजनिक स्थलों जैसे बस, ट्रेन, हवाई जहाज आदि स्थानों पर विस्फोट व गोलाबारी शुरू कर देते हैं। जिसमें कई निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार देते हैं। ऐसे खौफनाक मंजर को देख कर देश विदेश के लोगों के मन में भी घाव पैदा हो जाता है और विदेशी सैलानी हमारे राष्ट्र का भ्रमण करने में भय महसूस करने लगते हैं जिससे पर्यटकों की संख्या में काफी कमी हो जाती है और पर्यटन उद्योग प्रभावित होता है। आधुनिक समय के पर्यटक, शोर-गुल, चकाचौंध, कूड़ा कचरा जैसे-प्रदूषण से दूर प्रकृति के गोद में रहना पसंद करते हैं। जहाँ मन को शांति व सकून मिल सके, क्योंकि सदियों से ही मनुष्य शांति और सकून के प्रति आकर्षित रहा है। सेक्स टूरिज्म यानी "यौन पर्यटन" शब्द आधुनिक सभ्यता की देन है इसका अर्थ है कि पर्यटकों को आसानी से धन खर्च करके मनचाहा सेक्स होने वाले क्षेत्रों में यात्रा करना। पर्यटकों की मांग ज्यादातर अवयस्क लड़कें व लड़कियों की होती है। जिससे बढ़ती हुई पर्यटन संख्या के कारण "एड्स" जैसी भयंकर बीमारी का खतरा बढ़ता जा रहा है।

यात्रा का महत्व- सफल और सुखद यात्रा का पारिवारिक, शैक्षिक, व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अप्रत्यक्ष महत्व कहीं अधिक है। भाग-दौड़ के व्यस्त जीवन में चंद फूसत के क्षण परिवार के सदस्यों के साथ व्यतीत करना भगवान की देन समझिए। व्यस्त और दैनिक जीवन की चिंता से उपर उठकर एक दूसरे के समीप आकर एक दूजे की रुचि-अरुचि, पसंद-नापसंद अनसुनी बातों को समझने-समझाने के ये क्षण बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। विभिन्न जगह की संस्कृति, कला, रहन-सहन, खान-पान, जीवन शैली, भाषा आदि को प्रत्यक्ष देख कर महसूस करने का शुभ अवसर मिलता है। जिससे बहुपक्षीय ज्ञान में इजाफा होता है। वाह्य संसार को अपने अनुभव से सोचने-समझने का बच्चों को रहस्यात्मक अवसर मिलता है। बहुमूल्य समय को कैमरों व मोबाइल में कैद करने की कला, मनोरंजन के साथ (फोटोग्राफी) बच्चों स्वयं अवगत हो जाते हैं।

यू समझिये कि जो समय, पैसा, जोखिम भ्रमण के लिए व्यय किया ओ आजीवन संचित, सुखद अनुभूति के रूप में आप के मन मस्तिष्क में बन्द हैं इसकी यादें, जब आप चाहे, राहत दिला सकती हैं।

निष्कर्ष- निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि जब तक उक्त महत्वपूर्ण समस्याओं से निजात नहीं मिल जाता, तब तक पर्यटन के विकास में काफी समस्या का सामना करना पड़ेगा। इन कठिनाइयों के चलते हमारे पर्यटन उद्योग का विकास नहीं हो सकता। पर्यटन उद्योग के मूलभूत विकास के लिए बड़ी मात्रा में निवेश की जरूरत होती है, जो केवल बजट के प्रावधानों से पूरी नहीं हो सकती। इसके विकास के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारतीय अर्थव्यवस्था में, आधुनिक समय में पर्यटकों को रोजगार प्रदान करने वाला एक बड़ा उद्योग माना जा रहा है। इससे भी बढ़कर पर्यटन रोजगार का बहुत बड़ा साधन बन चुका है। जिससे हमारे पर्यटन के स्वरूप में विविधता और विस्तार आ गया है। विश्व के अनेक देशों और क्षेत्रों में पर्यटन रोजगार एवं राष्ट्रीय आय का महान स्रोत बना हुआ है। इसी कारण सरकारी स्तर पर प्रयास चल रहा है कि पर्यटन उद्योग को पूर्णरूपेण विकसित किया जाय जिससे विदेशी मौद्रिक भण्डार में वृद्धि होगी और अर्थव्यवस्था में मजबूती आयेगी। यात्रा के अनुभव लाभ भविष्य में नये भ्रमणकारियों के लिए भी मार्गदर्शन का काम करती है। उन्हें होने वाले जान-माल के खतरों से बचाया जा सकता है। जिससे आने वाला हर लम्हा खुशियों का होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. "कुरुक्षेत्र" मई 2012 "ग्रामीण पर्यटन" पृष्ठ संख्या-17-27 तक।
2. "कुरुक्षेत्र" मई 2008 "ग्रामीण पर्यटन" पृष्ठ संख्या 27-34 तक।
3. "कुरुक्षेत्र" जून 2005 पृष्ठ संख्या 37.
4. इण्डिया लाइफ/जुलाई 2006 पृष्ठ संख्या 8,9,10 तक।
5. "फेमिना" मार्च 2017 पृष्ठ संख्या 54,55.
6. "मेरी संगिनी" (4thD) अप्रैल 2008 पृष्ठ संख्या।
7. "गृहलक्ष्मी" मई 2008 पृष्ठ संख्या-52.
8. नेट।
9. अन्य।
